वर्ष 2 अंक 8 अगस्त 2018 पृष्ठ 28

तारतम मंजरी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
ब्रह्मज्ञान ही अमृत है।
सरसावा

ब्रह्मज्ञान ही अमृत है

प्रेम ही जीवन है

आध्यात्मिक उन्नति के आठ सूत्र

१. नियमित ध्यान
२. नियमित स्वाध्याय
३. सात्विक अल्पाहार
४. प्रबल पुरुषार्थ
५. परब्रह्म के प्रति समर्पण एवं गुरुजनों के कथनों के प्रति श्रद्धा
६. शिष्टाचार
७. दृढ़ संकल्प
८. अटूट आत्मविश्वास

स्वत्वाधिकारी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड रोड, सरसावा, जिला-सहारनपुर, उ.प्र.

Email : shriprannathgyanpeeth@ gmail.com **Youtube**: SPJIN **Website**: www. spjin.org
Twitter : @Raajan Swami **Whats App**: +917533876060

अनुक्रमणिका

०१.	सम्पादकीय	नीरू खुराना...	०१
०२.	प्रकाश गुजराती टीका के अंश	राजन स्वामी	०४
०३.	मूल घर	प्रणाम जी	०९
०४.	समर्पण	अमित निजानन्दी	१३
०५.	कैसे बेहतरीन हो हर.....	मधुसूदन	१४
०६.	सृष्टि रचना	बबली नलिनी	१६
०७.	ज्ञान की सार्थकता उसे...	डॉ. प्रवीण बत्रा	२१
०८.	हमारा सबसे बड़ा शत्रु....	सच्चिदानन्द जी	२५

ज्ञानपीठ सुविचार

उत्कृष्ट आचरण वाला ही उत्कृष्ट ध्यान लगा सकता है
और उत्कृष्ट ध्यान लगाने वाला ही
उत्कृष्ट आचरण का पालन कर सकता है।

सदस्यता शुल्क

सदस्यता शुल्क

भारत में	विदेश में
वार्षिक 110 रू.	.....
आजीवन 1000 रू.	.....

लेख में प्रगट किये गये विचार लेखक के
व्यक्तिगत विचार हैं इनके प्रति सम्पादक,
प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र सहारनपुर होगा।

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232
सम्पर्क सूत्र–8650851010

Youtube:SPJIN
वेबसाईट :– www.spjin.org
ई मेल :– shriprannathgyanpeeth@gmail.com

सम्पादकीय

दोस्ती और दीदार

श्री मुखवाणी में प्राण-प्रियतम श्री राजजी महाराज ने अपनी प्यारी आत्मायों के हृदय में उठने वाले प्रत्येक सवाल का जवाब किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं अवश्य दिया। कुरान में ही उन्होंने यह लिखवा दिया कि संसार में सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण बेमिसाल दोस्ती 'हक' की है, उसके पश्चात ही संसार के सम्बन्धों की है। परन्तु हम इस दोस्ती को सही तरीके से पहचान क्यों नहीं कर पाते?सुन्दर साथ जी! आज इसी विषय पर ही कुछ विचार करने का प्रयास करेंगें क्योंकि धनी से दोस्ती किये बिना, दीदार कदापि नहीं हो पायेगा। जहाँ दोस्ती होती है, वहीं सच्ची सुख शान्ति और आनन्द होता है और जहाँ ये सारे सुख होंगे, वो दोस्त विराजमान है, उसका दीदार आठों पहर चौसठ घड़ी अर्थात हर पल होता ही है। किसी उर्दू शायर ने क्या खूब कहा है-

दिल में है तस्बीर यार की, बस जरा सी,
नजर झुकाई और दीदार कर लिया।

बस यही अन्तिम स्थिति शरीयत के पश्चात तरीकत, उसके बाद हकीकत और फिर मारफत की है, जहाँ हर पल की दोस्ती और दीदार है। यही अध्यात्म का चरम और परम सत्य है, जहाँ द्वैत का ब्रह्माण्ड क्षय हो जाता है। अब प्रारम्भ होता है- हकीकत यानि सत्य का साक्षात्कार जहाँ योग माया के चिन्मय ब्रह्माण्ड में अखण्ड रास निरन्तर चलती रहती है, परन्तु माया का योग किंचित मात्र भी अत्यन्त दुःख देता है। इसलिये ब्रह्मात्माएँ इस ब्रह्माण्ड में ज्यादा देर नहीं रह सकती। अपने प्राण-प्रियतम से अरजी करती हैं कि हमें उस ब्रह्माण्ड में ले चलिये, जहाँ क्षणिक भी दूरी न हो। 'रास' ग्रन्थ की अन्तिम चौपाई में निम्न शब्दों में यह भाव श्री इन्द्रावती जी के द्वारा इस प्रकार से व्यक्त किया गया हैः-

वृंदावन देखाडयूं रास रमाडयां रंग।
पूर्व जन्मनी प्रीतडी, तेहमणां आणी अंग।।
श्री इन्द्रावती कहे अमने वाला भला रमाडयां रास।
पछे ते घर मूलगे, वालो तेडी चाल्या सहु साथ।
वाला वालम जी मारा, जी रे प्रीतम अमारा।।
रास-४७/४५-४६

हे प्राण- प्रियतम! हमने परम धाम में आपसे सुखः दुःख का खेल मांगा था। आपने हमें वृंदावन दिखाया रास की सुखदायी रामते खिलाई। मूल सबन्ध का भी एहसास करवाया। इसके बाद समस्त सखियों को लेकर वाला जी अपने मूल-घर परम धाम ले चले हैं। इस दोस्ती और दीदार की स्थिति तक पहुंचने के लिये एक आत्मिक सम्बन्ध

(Soul Relation) की आवश्यकता होती है, उसके कारण ही नजदीकी का एहसास हो सकता है। इस संसार में भी जहाँ कहीं सुन्दर साथ में सच्ची दोस्ती होती है, उसका आधार कुरबानी होती है वहाँ समर्पण सिर्फ 'मैं' का ही करना है। जहाँ प्रेम हो, सत्य का दर्शन हो, वहाँ निस्वार्थ भाव से समर्पण हो जाता है। बस आवश्यकता है-विचार और विवेक की। विचारों का विस्तार ही दिल है, जिसे सागर सदृश्य बनाने के लिये ही धाम-धनी इतने श्रेष्ठ शब्द लेकर आये हैं, ताकि सुन्दर साथ के विचारों में एकरूपता, एकरसता और एकदिली का भाव उत्पन्न हो। जहाँ यह सब दृष्टिगोचर होता है वो घर, मन्दिर या आश्रम 'धाम' जैसा ही प्रतीत होगा। 'मूल' में प्रेम, आदर और सत्यता का भाव ही एक स्पष्ट विचार धारा और विस्तृत चिन्तन का सृजन करते हैं। हमारी छोटीसोच, छोटे विचार, छोटा ही तो सुख और एहसास देंगे। बड़ी विचार धारा विशालता का प्रयाय है और वहीं स्थाई सुख-आनन्द और एश्वर्य रह सकता है। परमधाम के श्री राजजी महाराज की अति रहस्य से पूर्ण बातें हमें तब समझ आयेंगी जब उनके हुकुम और मेहेर से हमारा चिन्तन और 'चितवन' श्री मुख वाणी पर आधारित होगा।

हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम।
नजर छोड़ो री झूठ सुपन, आए देखो सत वतन।। कि० ७६/१२

ए खेल झूठा तो छोड़या जाए, जो सुख अंग में भराए।
जब सुख देखो केलि, तब दुःख देओगे ठेलि।।
कि.७६/१३

सत साथ देत देखाई, सत आनन्द अंग न भाई।
सत साथ सों करो प्रीत, देखो सत घर की ए रीत।। कि.७६/३१

जब श्री मुख-वाणी के पठन, मनन और चिन्तन के साथ ही साथ 'चितवन' की प्रक्रिया भी चलेगी तो प्राण प्रियतम के ''स्वरूप सुन्दर सनकूल सुकोमल, रूह देख तू नैना खोल नूर जमाल।'' का हल्का-हल्का एहसास अवश्य ही अन्तःकरण को महसूस होगा। हम सबने यह कहावत पढ़ी-सुनी हुई है- करत-करत अभ्यास, मूढमति होत सुजान।। Pracitce makes a man Perfect. हमारा संकल्प यदि दृढ़ होगा तो अनन्त एवं अपार मेहरों के सागर मेहरबान अपनी ही आत्मायों पर दया कृपा एवं मेहेर नहीं करेगें तो सारा संसार किस प्रकार से अखण्ड होगा। निरन्तर चिन्तन से और चितवन से मन और जीव की भी यह इच्छा तीव्र होती जायेगी कि अपने धनी के कोमल चरण कमलों की शोभा और सुन्दरता को हर पल निरखता रहे। वास्तव में यह इच्छा उत्पन्न तो आतम के कारण ही होती है। आतम चूंकि परातम और धनी के दिल का अमिन्न अंग है। इसलिये तन-मन और जीव तो शरीयत, तरीकत और हकीकत के कारण इस सुख

के अधिकारी हो जाते हैं। बहिश्त के सुख भी यही प्राप्त कर रहे हैं और आखिरत के समय इन्हीं को ही अखण्ड शौंभा भी प्राप्त होनी है। इन्हीं दिव्य स्वरूपों को ही हम समस्त सुन्दर साथ पारब्रह्म स्वरूप मान कर सिजदा करते हैं। बाबा दया राम साहिब जी, परम हंस महाराज राम रतन दास जी महाराज मंगलदास जी, धर्मवीर जागनी रतन सरकार साहेब जी को हम श्री राजजी महाराज का साक्षात स्वरूप मान कर ही नतमस्तक होते हैं। जीवन में दुःख दूर करके, अपनी बरकत, मशकत और रहमत की बख्शीश से हमारे जीवन में सुखद परिवर्तन भी ले आतें हैं। हमारी अरजी भी इसीलिये कुबूल हो जाती है क्योंकि इन्हीं पवित्र एवं अखण्ड स्वरूपों के अर्शदिल में श्री राजजी महाराज साक्षात विराजमान होते हैं। हम इन्हीं के चरण-शरण में रह कर ही स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हैं। क्योंकिः-

फेर-फेर सरूप जो निरखिए, नैना होए नहीं तृपित।
मोमिन दिल अर्स कहया, लिखी ताले ए निसबत।। सिन०१८/१

हम बार-बार इनके सुन्दर हंसते हुए,नूर से भरपूर स्वरूप को निरखते हैं, परन्तु नेत्र हैं कि उनका दिल ही नहीं भरता। नेत्रों की यह चाहत होती है कि यह सुन्दर, सुखदायी स्वरूप एक पल के लिए भी दिल-नजर से दूर न हों निरखते-निरखते एक दिन वो स्वरूप कब दिल में बस जायेगा, पता ही नहीं चलेगा क्योंकि मोमिनों के भाग्य में ही यह निसबत लिखी हुई है। यही निसबत ही श्री राजजी महाराज के दिल के प्रेम और मेहेर का साक्षात स्वरूप है, जिसे हम श्री 'मेहेर-सागर' के पाठ में हर समय महसूस करते हैंः-

मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर।
हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखों मोमिनों मेहेर कादर।।

इसी प्रकार हम अपने हृदय में जिसे सागर जैसा विशाल होना है, जो केवल धनी के हुकुम और निसबत से ही हो सकता है, तभी धाम-धनी के प्रेम, हुकुम, इश्क और इलम को अनुभव कर सकेंगे। तब कोई चाहना का विचार भी अपने हृदय में नहीं लायेगें। यही तारतम और खुदाई इलम का वास्तविक फल होगा, जब श्री सतगुरू और श्री राजजी महाराज की अखण्ड दोस्ती हम अपने हृदय की गहराईयों में महसूस कर सकेंगें। यही श्री राजजी महाराज का तीसरा सिनगार भी कहा गया है। जब प्राणों के प्रियतम अपने अर्श अर्थात, मोमिनों के दिलों में विराजमान होगें। तब यही दिल ही तो 'खिलवत-खाना कहलायेगा और अपने प्राण प्रियतम की समस्त दिव्य न्यामतें एक पल के लिये भी दूर नहीं हो पायेगी। आइये प्रमाण भी देखेः-

चाहिये निसदिन हक अर्स में, और इत हक खिलवत।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अर्स न्यामत।।- सिन० १०/२

सप्रेम प्रणाम

नीरू खुराना कानपुर।

प्रकाश गुजराती टीका के अंश

मूंजा साथ सुहागी रे, हांणें अईं को न सुजाणो सिपरी।

पेरोनी पांण न सुजातां, आइडा से वरी रे।।१।।

मेरे सुहागी सुन्दरसाथ जी! अब अपने प्रियतम को क्यों नहीं पहचान रहे हैं?पहले भी आपने उन्हें नहीं पहचाना। वही धाम धनी अब पुनः (श्री मिहिरराज जी के तन में) आये हैं।

सेई सजण सेई गालङ्यूं , सेई कास्यूं करीन।

पांण जो काजे पिरी पांहिंजा, पाणी अखियें भरीन।।२।।

अब वे ही प्रियतम हैं, जो पहले श्री देवचन्द्र जी के तन में लीला कर रहे थे। वैसी ही चर्चा कर रहे हैं तथा उसी प्रकार तारतम ज्ञान से सबको पुकार रहे हैं। हमारे धाम धनी हमारी आत्म–जागृति के लिये अपनी आंखों में आसूं भरकर हमें समझा रहे हैं।

सेई सिखामण डियन सिपरी, ताणीन घर मणे।

पाण पाहियूं कीं ओसरूं, वलहो आव्यो वरी करे।।३।।

प्रियतम हमें पहले की तरह ही सीख दे रहे हैं तथा हमें परमधाम चलने की प्रेरणा दे रहे हैं। धाम धनी पुनः दूसरी बार आये हैं। ऐसी अवस्था में हम उन्हें पुनः क्यों भूलें ?

कूकडियूं करीन पेहेलीनियूं , हांणें को न सुजाणो साथ।

न तां खरे बेपोरे सेज सोझरे, हाणे थींदी रात।।४।।

वे पहले की भांति ही पुकार रहे हैं। किन्तु हे साथ जी! अब भी आप उनकी पुकार को क्यों नहीं सुन रहे हैं?अब यदि उन्हें आप नहीं पहचानेंगे तो तपती दोपहरी के उजाले में रात्रि जैसा दृश्य उपस्थित हो जायेगा अर्थात् हमारे हृदय के अन्दर गहन अन्धकार छा जायेगा।

पोए हथ हणंदा पटसे, हैडे डींदा घा।

सजण सूरे में वेही न रेहेंदां, हल्ली वेदानी हथ मंझां।।५।।

शब्दार्थ– पटसे– धरती पर, सूरे में–माया में

अर्थ– बाद में आप धरती पर हाथ पटकेंगे और छाती पीटते–पीटते उसमें घाव कर लेंगे। धाम धनी इस माया में हमेशा बैठे नहीं रहेंगे। वे हमारे हाथ से चले जायेंगे।

धाएडियुं करीन पिरी, परी परी चए वेण।

पाणजे काजे पिरी बभेरां, पाण त्रेमाईन नेण।।६।।

शब्दार्थ– त्रेमाईन–बहाते हैं, धाएडियूं–पुकारना।

अर्थ– प्रियतम अनेक प्रकार के वचनों से पुकार कर रहे हैं। वे हमारी आत्म–जागृति के लिये दूसरी बार भी अपनी आंखों से आंसू बहाते हैं।

मायातां डिठियां मंझ पेहीने, सोझरे सिपरियन।

भती भती जी रांद डेखारण, पिरी आंदो तारतम।।७।।

शब्दार्थ– पेहीन– प्रवेश करके, सोझरे–उजाला।

अर्थ– हम इस संसार में बैठकर माया का खेल देख रहे हैं। हमें तरह–तरह का खेल दिखाने के लिये धाम धनी तारतम ज्ञान का उजाला लेकर आये हैं।

जा माया आं मोंहें मंगई, सा डिठियां वी वार।

साथ हाणें पिरी साथ हल्लजे, जीं पिरी पेराईन करार।।८।।

हमने धाम धनी से जिस माया का खेल मांगा था, उसे हम दूसरी बार (पहली बार व्रज में) देख रहे हैं। हे साथ जी! अब हमें प्रियतम के साथ परमधाम चलना चाहिये, जिससे प्रियतम प्रसन्न (आनन्दित) हों।

वभेरे पिरी पाणजे काजे, सायर में विधाऊं आप।

पाणजे काजे पांण विधाऊं, हाणें को न सुजाणो साथ।।९।।

प्रियतम हमारे लिये ही इस भवसागर में दूसरी बार आये हैं। हे साथ जी! जब वे अपने लिये ही इस संसार में आये हैं तो अब हम उनकी पहचान क्यों नहीं कर रहे हैं?

आकारतां अंई भले पसो था, पण पसो मंझियो तेज।

पिरी पांहिंजा पाण पाणसे, घणूं करीन था हेज।।१०।।

हे साथ जी! आप भले ही उनके (श्री मिहिरराज जी के) बाह्य तन को क्यों न देख रहे हों, किन्तु उनके धाम हृदय में विराजमान श्री राजजी के आवेश स्वरूप के तेज को भी तो देखिये। तब आपको विदित होगा कि धाम धनी परमधाम के हम सब सुन्दरसाथ से कितना अधिक प्रेम करते हैं।

हांणें केही पर करियां आंसे, को न सुजाणों सेंण।

सजण सेई पुकार करीन, आंके निद्र अचे कीं नेंण।।११।।

हे साथ जी! अब आप ही बताइये कि मैं अब आपके साथ किस प्रकार का व्यवहार करूँ ?आप अपने प्राणेश्वर अक्षरातीत की क्यों नहीं पहचान कर पा रहे हैं ?धाम धनी पहले (श्री देवचन्द्र जी)की ही तरह तारतम ज्ञान से आपको पुकार रहे हैं। फिर भी आपकी आंखों (हृदय) में माया की नींद क्यों हैं?

नेंणेंनी मंझां निद्र न वंजे, जे हेडी मथां थेई।

सेणेंसे अंई साथ न हल्यां, पोरया कुरो कंदा रही।।१२।।

आपकी आंखों (हृदय) से माया अभी भी क्यों नहीं जा रही है ?आप की ऐसी अवस्था क्यों हुई?यदि प्रियतम के साथ परमधाम नहीं गये तो बाद में यहां रहकर क्या करेंगे?

हिन डुखे मंझा को न निकरयो, केहो डिसोथा भाल।

जडे हली वेंदा हथ मंझां, तडे केहा थींदा हाल।।१३।।

इस दुःखमयी संसार से कोई बाहर नहीं निकला है। आप यहां आशा भरी दृष्टि से किसकी ओर देख रहे हैं?जब प्रियतम हाथ से निकल

जायेंगे तब सोचिये कि आपकी क्या अवस्था होगी?

पाणके हिन पिरी धारा, वेओ चोय ईं केर।

साथ संभारे न्हास्यो दिलमें, जिन चुको हिन वेर।।१४।।

हे साथ जी! धाम धनी के अतिरिक्त और कौन है जो हमें इस प्रकार आत्म–जागृति के लिये कहे ?आप अपने हृदय में इस बात का विचार कीजिए और इस अवसर को न गंवाइये।

हिकडी आर चुके मांहडू , तेके वी आर अचे बुध।

हेतरा भठ वरंदे मथे, आंके अजां न वरे सुध।।१५।।

यदि मनुष्य एक बार चूक जाता है तो दूसरी बार उसे बुद्धि आ जाती है। हे साथ जी! आपके सिर पर इतनी आग जली (ज्ञान की वर्षा हुई) फिर भी आपको सुधि नहीं हुई।

हिक वेर म थीजा विसर्‌या, हित न्हाय बेठे जो लाग।

अंख उघाडे ढकजे, कोडमी पातीमें थिए अभाग।।१६।।

इस बार अपने आराध्य अक्षरातीत को न भूलिये। अब बैठने (निष्क्रिय रहने) का समय नहीं है। आंखों के खोलने और बन्द करने में जो समय लगता है (एक पल), उसके करोड़वें भाग को भी यदि आप व्यर्थ में गंवाते हैं तो निश्चय ही आप भाग्यहीन कहलायेंगे।

आऊं खीजी आंके कीं चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ।

पण अंई हिन माया मंझां, केही कढंदा निध।।१७।।

मैं आपसे क्रोधित होकर क्यों बोलूं?मेरी जिह्वा ऐसा नहीं कर सकती। किन्तु इस माया में फंसे रह कर आप कौन सी निधि प्राप्त कर लेंगे?

वेण विगो आंके चुआं, सा वढियां मुंहजी जिभ।

पण अंई हिनमें पई रह्या, हिन मंझां कां न थिंदियां सिध।।१८।।

शब्दार्थ– वढियां– काट डालूं, मुंहजी–अपनी, विगो–टेढ़ा, कट।

अर्थ– यदि मैं आपके लिये कोई कटु शब्द

बोलूं तो मैं अपनी जिह्वा को ही काट देना चाहूंगी। किन्तु आप ही बताइये कि इस माया में फंसे रहकर आप क्या करेंगे ?इस मायावी संसार में उलझे रहकर किसी का भी आध्यात्मिक लक्ष्य सिद्ध नहीं हुआ है।

हिन सोझरे जे न सुजातां, वभेरकां हीं ईं।

पोए सांणेनी सिपरियन अग्यां, मोंह खणदियूं कीं।।१६।।

तारतम ज्ञान के इस उजाले में यदि आपने अपने प्राणवल्लभ को दूसरी बार भी नहीं पहचाना तो परमधाम में जागृत होने पर धाम धनी के सम्मुख अपना मुख कैसे उठायेंगें?

पेरोनी पाण नजर न्हारींदे, व्यो अवसर हथां।

जडे हथे मंझे हली वेयां, तडे केहेडी थेईनी पाण मथां।।२०।।

पहले भी हमारे देखते–देखते हमारे हाथ से अवसर निकल गया। सोचिये! जब प्रियतम हमारे मध्य से चले गये (अदृश्य हो गये) तो हमारे शिर पर क्या बीती अर्थात् हमें कितना दुःखद अनुभव हुआ?

हींय हंद एहेडो आय, हिक वेरमें थिए वेणां।

साथ तां आइन सभे समझू , न्हाय केहे में मणां।।२१।।

यह मायावी जगत् तो ऐसा है कि एक ही क्षण में सब कुछ नष्ट हो जायेगा। हे साथ जी! आप सभी तो बहुत ही समझदार हैं। किसी में भी बुद्धि विवेक की कोई कमी नहीं है।

साथ अंई कीं कीं न्हार्‌यो संभारे, गुण म छडो मोकरे मोय।

इंद्रावती चोय पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो चोय।।२२।।

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं कि हे साथ जी! प्रियतम के कुछ–कुछ वचनों को याद करके उनका विचार तो कीजिए। धनी के गुणों को आत्मसात करना न छोड़िये तथा माया से मोह न करें। मैं आपके चरणों में लगकर कितना कहूँ कि जाग जाईए, जाग जाइए।

।।प्रकरण।।१७।।चौपाई।।३८०।।

मूल घर

धाम तलाब कुंजवन सोहे मानिक नेहरे वन की जोहे।

पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।।

आठो सागर आठ जिमी के, ये पच्चीस पक्ष है धाम धनी के।।

हम जहां रह रहे हैं वह हमारा घर झूठा-नाशवान है। हमारा असल मूल घर तो दिव्य ब्रह्म पुरी अखंड परमधाम है। जिसके बारे में धर्म ग्रन्थों में संकेत में लिखा हुआ है। हमें अपने घर के बारे में पता होना चाहिए कौन कौन से पक्ष है। हम कहां-कहां घूमने खेलने आनन्द की लीला करते हैं।

परमधाम के ठीक मध्य में अनेक रंगों की तेजोमयी झलकार से युक्त नौ भोम ऊंचा रंग महल विद्यमान है। इस महल के बारे में गुरू ग्रन्थ साहिब में भी लिखा हुआ है।

अति ऊँचा ताका दरबारा, अन्त नहीं कछु पारावारा।

सोटि कोटि लख घावे, इक तिल ताका महल ना पावे।।

श्री युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी सखियों के साथ इसी रंगमहल में ज्यादा से ज्यादा अपना वक्त बिताते हैं। रंग महल की नजदीकी पहली परिकरमा में जहां चांदनी चौक धाम दरवाजा है पूर्व की तरफ सात वन- केल, लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू, नारंगी और वट विद्यमान हैं। दक्षिण तरफ वट पीपल की चौकी के चार भोम ऊँचे वृक्ष शोभायमान हैं। एक वट का वृक्ष है और एक पीपल का वृक्ष है। हर भोम में हिंडोले लगे हुए हैं। रंगमहल के पीछे पश्चिम में रंग बिरंगे खूशबूदार फूलों के बगीचे में फूल और नूरबाग है। नूरबाग में चारों तरफ नूर के थंभ लगे हुए है। नूरबााग नीचे और उस की छत पर फूलबाग है। नूरबाग के पीछे अन्नवन और उसके पीछे दूब लगी हुई है। इन बगीचों में नहरों, चेहेबच्चों व फव्वारों की अदभुत

शोभा है। रंग महल के उत्तर में लाल चबूतरा, बड़ोवन के वृक्ष, खड़ोकली और ताडवन के वृक्ष शोभायमान हैं।

अब होती है शुरू दूसरी परिकरमा पूर्व में यमुनाजी, केल व वट का पुल तथा अक्षरधाम विद्यमान है। श्री यमुना जी का जल दूध से भी अधिक उज्जवल रंग का, स्वाद में मिश्री से भी मीठा सुगन्धी से भरपूर तथा अत्यन्त निर्मल है। अक्षर धाम की तरफ भी यमुना जी के किनारे सात वन आए हैं। दक्षिण की तरफ एक हीरे की जगमगाहट से युक्त हौज-कौसर ताल शोभायमान है। श्री यमुना जी का जल इसी में समाता है। कुंज-निकुंज वन हौज कौसर ताल को घेरकर अक्षर धाम के पूर्व तक विद्यमान हैं। हौज-कौसर तालाब के दक्षिण में फव्वारों व झरनों से ढका २४ हांस का महल अलग ही शोभा ले रहा हैं। पश्चिम में दूसरी परिकरमा में पश्चिम चौगान (विशाल रेती का मैदान) शोभायमान हैं। यहां सखियां अनेक प्रकार के जानवरों पर सवारी का आनन्द लेती हैं। उत्तर की तरफ एक पुखराज के नंग के अन्दर अनेक रंगों की झलकार से युक्त १००० भोम ऊंचा पुखराज पहाड़ शोभायमान है। पुखराज को घेर कर महावन, मधुवन और बडोवन के ऊंचे-ऊंचे सुन्दर वृक्ष शोभायमान है। महावन के वृक्ष की ऊंचाई १००० भोम। मधुवन की ऊंचाई ५०० भोम और बड़ोवन की ऊंचाई २५० भोम की आई है। श्री यमुना जी पुखराज पहाड़ से ही प्रगट होती हैं पूर्व तरफ चल कर मरोड़ खा कर दक्षिण तरफ मुड़कर रंगमहल और अक्षर धाम के बीच से होती हुई आगे जा कर मरोड़ कर पश्चिम दिशा मुड़ कर सीधा हौज कौसर तालाब में समा जाती है।

तीसरी परिकरमा में चारों तरफ घेर कर स्टेडियम की सीढ़ियों की भांति जवेरों की नहरों (महलों) के नौं फिरावे हैं। आड़ी खड़ी नहरों के मध्य १२० चौकों की व हारे (फिरावे)

चारों तरफ हैं। इन चौको में जवेरों के महल हैं।

चौथी परिकरमा में जवेरों के महलों के बाहरी तरफ, रंग महल की दक्षिण दिशा में एक माणिक नंग की ललिमा से युक्त १२००० भोम ऊंचा माणिक पहाड़ शोभायमान है। माणिक पहाड़ की सीमा में जेवेरों के महलों को चारों तरफ से घेर कर बड़ोवन, मधुवन महावन शोभायमान हैं।

पांचवीं परिकरमा में इन सबको चारों तरफ घेर कर वन की नहरें (महल) विद्यमान हैं, जहां वृक्षों, फूलों, पत्तों के ही महल बने हुए हैं। जो ५ भोम ऊंचे हैं किन्तु एक एक भोम में १२०००-१२००० भोमे होने से कुल ६०००० भोमें हो गयी है। इस प्रकार बड़ोवन, मधुवन, महावन तथा वन की नहरें चार सीढ़ियों के समान दिखायी दे रही हैं। इन सबकी डालियां आपस में मिली हुई हैं, जिससे बड़ोवन से वन की नहरों तक कहीं भी आ जा सकते हैं। बड़ोवन, मधुवन, महावन तथा वन की नहरों की शोभा एक ही समान है, केवल ऊँचाई का फर्क है।

छठी परिकरमा में वन की नहरों को चारों तरफ से घेर कर छोटी रांग की हवेलियों की चार हारें हैं जो ६०००० भोम ऊंची हैं।

सातवीं परिकरमा में छोटी रांग को घेर कर अनके रंगो की जगमगाहट से युक्त १४ करोड़ ४० लाख भोम ऊँची आकाश को छूती हुई बड़ी रांग है, जिसके अंतर्गत कुल ८० महाहवेलियां (दीवाल) आठ सागर तथा आठ जिमी विद्यमान है। प्रत्येक दो सागरों के मध्य एक जिमी है, इस प्रकार आठसागरों के मध्य आठ जिमी है।

नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर।

रस सर्वरस सागर, बिन मोमिन ना पावे कोई और।।

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक।

यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक।।

चौपाई में तो पच्चीस पक्ष लिखे हैं पर गिनती करें तो पच्चीस से अधिक पक्ष हैं परमधाम में।

किसी को भी हटाया नहीं जा सकता ।

१. धाम- रंगमहल और अक्षरधाम।

२. तालाब- रंग महल की दक्षिण में हौज कौसर तालाब और हौज कौसर के दक्षिण में २४ हांस का महल है।

३. कुंजवन- कुंजवन, निकुंज वन, कुंज और निकुंज की रेती- हौज कौसर ताल को घेर कर अक्षर धाम के पूर्व तक गया है। यमुना जी के अग्नि कोने में कुंज वन की रेती है। रंग महल के दक्षिण में वट पीपल की चौकी।

४. मानिक पहाड़- रंग महल की दक्षिण में मानिक पहाड़- मानिक पहाड़ की हद में बड़ोवन, मधुवन और महावन के वृक्ष।

५. नहरें वन की- जवेरों की नहरें और वन की नहरें।

६. पश्चिम चौगान- रंग महल के पश्चिम में नूर-फूल बाग, अन्न वन, दुब दुलीचा और पश्चिम की चौगान।

७. बड़ोवन- रंग महल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरा, खड़ोकली, बड़ोवन, मधुवन, महावन और ताडवन। बड़ोवन, मधु महावन के वृक्ष परमधाम में जगह जगह पर भी आए हैं।

८. पुखराजी- रंग महल की उत्तर दिशा में पुखराज पहाड़।

९. यमुना जी- रंग महल और अक्षर धाम के बीच में यमुना जी और दोनों तरफ सात वन - केल, लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू, नारंगी और वट।

आठों सागर आठ जिमी- नूर, नीर, खीर, दधी, घृत, मधु, रस और सर्वरस सागर- बड़ी रांग और छोटी रांग की चार हार हवेली

९+१६= २५ पक्ष परमधाम के।

हमें पच्चीस पक्ष को अपने दिल में बसाना है।

हमारे जीवन के आधार अक्षरातीत ने २५ पक्षों की चितवनि जो ज्ञान दिया है, वह हमारी सर्वोपरि सम्पदा है। आधे पल के लिये भी चितवनि के सुख को न छोड़ें।

आपण धन तां एह छे, जे दिए छे आधार।

रखे अधखिण तमें मूकता, वालो कहे छे वार वार।।

अपने परमधाम में जो पच्चीस पक्ष हैं उनकी शोभा में हमें रात-दिन डूबना चाहिए।

प्रणाम जी

बबली (नलिनी ढ़ीगरा)

सरसावा

समर्पण

प्यारे सुन्दरसाथजी, यूं तो हम सभी ने कई बार इस शब्द को कहा,सुना और पढ़ा होगा संभव हैं हमने इस विषय पर गहन चिन्तन न किया हो परन्तु जब हम आध्यात्म के पथ पर अपने कदम बढ़ाते हैं और उस प्रियतम परब्रह्म की सानिध्यता प्राप्त करना चाहते हैं तो समर्पण ही वह मार्ग दीखता है जिस पर चलकर हम अपने जीवन के सर्वोपरि लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं

समर्पण का सीधा सा अर्थ है कि जो आपका का है वह सब कुछ अपने आराध्य प्रियतम को सौंप देना अर्थात अपने अस्तित्व को पूरी तरह से प्रियतम के स्वरुप में विलीन कर देना। अंग्रेजी मे कहें तो " complete surrender"- Without the complete surrender of ones self] it is impossible to have a glimpse of the Eternal Lord-

मैं मैं क्योंए मरत नहीं , और
कहावत हैं मुर्दा।
आड़े नूर जमाल हैं ,यही हैं पर्दा।

केवल एक ही चाहत रह जाये कि मेरा प्रियतम प्रतिपल ,प्रतिछण मेरी नजरों के सामने रहे ऐसा प्रतीत हो कि शरीर के प्रत्येक अंग में केवल वो ही बसा हो ।

रोम रोम बीच रमे रह्या , पीऊ
आशिक के अंग
इश्क ले ऐसा किया , कोई होगया एक
ही रंग।।

वैसे तो जब तक हमारा यह शरीर है , हमें अपने जीवनयापन के लिए सांसारिक कार्यों मे भी अपना समय व्यतीत करना पड़ता हैं आवस्यकता है कि हम अपनी प्राथमिकताओं का सही आंकलन करे अर्थात संसार के झूठे अर्थ और सुख सुविधाओं को एकत्रित करने के बजाय, अखंड की सम्पदा का संग्रह करें

प्रतिदिन कुछ समय के लिए संसार के सारे कार्यों को भुलाकर युगल स्वरुप की शोभा

,सिंगार मे खुद को डुबाने का प्रयास करें

श्री महामति कहे ए मोमिनो , याद करो निज सुख ।

और सब धंधा छोड़ के , देखो नूर जमाल का मुख।।

जैसे जैसे युगल स्वरुप की शोभा हमारे आतम के हृदय मे बसती जाएगी ,यह संसार हमसे छूटता जायेगा एक दिन वह घड़ी भी आएगी जब हम खुद को अपने अखंड धाम में धनी के चरणों के समीप पाएंगे

ज्यों ज्यों होवे अर्श नजीक , खेल त्यों त्यों होवे दूर ।

यूं करते छुटया खेल नजरों , तो रहे कदम तले हजूर।।

उस समय हमें यह आभास होगा कि धनी और हम अलग नहीं हैं बल्कि एक हैं हम तो उनके ही अंग स्वरूपा हैं हम पिया में और पिया हम में बाकी कुछ भी नहीं

हम अरस परस हैं हक के ,ए देखो मोमिनो हिसाब।

हम हक में हक हम में, और हक बिना सब खाब।।

अमित निजानन्दी
नागालैंड

कैसे बेहतरीन हो हर कोशिश

सफलता की चोटी पर बैठे लोगों को देख कर हर एक के मन में यह सवाल उठता है कि यह भी तो हमारे जैसे ही हैं। फिर हम इतने कामयाब क्यों नहीं हैं?दरअसल हम कामयाबी के उस मुकाम को देखते हैं लेकिन वहा तक पहुँचने के लिए की गई मेहनत को नहीं देख पाते। इसलिए जरूरी है कि हमारा पूरा दृष्टिकोण अंतिम लक्ष्य पर न होकर उन जरियों पर हो, जिन के सहारे वहाँ पहुँचा जा सकता है।

(१) खुद पर भरोसाः- चुनौतियाँ, नाकामी और निराशा से किसे दो चार नहीं होना पड़ता। हां, यह जरूरी है कि ये किसी के हिस्से ज्यादा और किसी के हिस्से कम आते हैं। लेकिन इन पर जीत वही प्राप्त कर सकता है, जिसे खुद पर पूरा विश्वास हो। यहां स्वयं पर दया या संशय के लिए कोई जगह नहीं।

(२) किसी हाल में रूकें नहींः- राह की मुश्किलें देख कर रूक जाने या कदम पीछे की ओर मोड़ लेने का विचार भी जेहन में न लाएं। जब आगे बढ़ना मुश्किल हो जाए तो कठिनाइयों का सामना दृढ़ता के साथ करें और याद रखें कि दूर से जो राह का अंत

दिखाई देता है। वह असल में एक मोड़ होता है।

आप सुन्दर साथ को याद होगा कि जब से श्री राजन स्वामी जी ने आश्रम की नींव का पत्थर रखा कितनी ही सामाजिक, मायक और कई प्रकार की कठिनाइयां आईं। पर पूज्य स्वामी जी ने कभी भी डर या घबरा कर पीछें नहीं देखा और सारे समाज में एक ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया। इस समय पन्ना जी में भी एक बहुत बड़ा आश्रम (ज्ञानकेन्द्र) केवल पूज्य स्वामी जी के दृढ़ निश्चय के ही कारण ऐसा हो सका है।

(३) जो सही हो वही करें:- ''बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताए।'' इस कहावत को अपने जीवन का मूल मन्त्र बना लें और मंजिल की ओर बढ़ने वाले हर कदम को अक्लमंदी के साथ उठाएं। क्योंकि बिना सोचे समझे किया गया काम दिशाहीन मिसाइल की तरह होता है।

अशुभ चिन्तन मानसिक दुर्बलता का प्रतीक है। इस से मन की कार्य करने वाली शक्तियां विनष्ट होती हैं। उत्साह क्षीण होता है। आशावादिता नष्ट होती है। जैसे योग, आसन और व्यायाम के बिना मानव शरीर पुष्ट नहीं होता। ठीक उसी तरह मन का कार्य संपन्न करने के लिए कुछ न कुछ मानसिक योग- व्यायाम भी आवश्यक है। जिस मानव में असीम शारीरिक शक्ति हो लेकिन मन का स्वरूप विकसित न हो, उसे पूर्ण मनुष्य नहीं कहा जा सकता। मन में बीते हुए दुर्बल विचारों और हानिकारक विचारों को शुद्ध कीजिए। इन्हें स्वच्छ करना बहुत जरूरी है।

स्वभावतः मन चचंल है। कोई तत्व विशेष विचार या भावना को ले लीजिए। वह चाहे जैसा शुष्क क्यों न हो उस पर मन की समग्र वृतियों को एकाग्र कर दीजिए। मन कुछ समय के बाद भागेगा किन्तु आप सयंम द्वारा बांधे रखिए। विचलित न हों। इससे मन में दृढ़ता आती है। मनन करना मन का सर्वश्रेष्ठ व्यायाम है। शास्त्र कहता है जो मनुष्य अपने विषय में तुच्छ विचार रखता है, वह भयंकर रोग से पीड़ित है। ऊंची भावना को मन में लेकर उसी विषय में निमग्न हो कर विचरण करें उसी से आत्मा को स्नान कराते रहें।

इसी प्रकार ध्यान के विषय में भी है। इस में मन की चंचलता को, समग्र वृत्तियों को एकाग्र करने से ध्यान में दृढ़ता आती है। मन ध्यान में लगने लगता है।

''तकदीर की जरूरत उसे होती है।
जिसे खुद अपने आप पर विश्वास नहीं हो।''

प्रणाम जी

मधुसूदन मल्होत्रा

नूर महल

सृष्टि रचना

हद पार बेहद है, बेहद पार अक्षर ।
अक्षर पार वतन है, जागिए इन घर।।

सभी धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि परमात्मा एक है। पूर्ण ब्रह्म परमात्मा सत है चित है और आनन्दमयी है। सृष्टि असत है जड़ है और दुःख मयी है। जब हम इस सृष्टि की ओर निहारते हैं तो मन यह सोचने के लिए विवश हो जाता है कि इन अनन्त नक्षत्रों को किसने आकाश में स्थापित किया है?उनमें गति कहां से आ रही है। ये किस पदार्थ से बने हैं। यह सृष्टि क्यों बनी किसने बनायी, कैसे बनायी तथा क्या यह ऐसी ही रहेगी या कहीं विलीन हो जायेगी।

धर्म ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से लिखा है, कि यह सृष्टि नाशवान है। यह संसार एक सपना है। इसे बनाने वाला इस सृष्टि से परे बेहद और बेहद से भी परे अक्षर है और अक्षर से भी परे अक्षरातीत उत्तम पुरूष ही परमात्मा कहलाने योग्य है। उपनिषदों में कहा है- अक्षरात् परतः पर। पूर्ण अक्षरातीत उत्तम पुरूष को युवा, स्वरूप वाला कहा गया है। वह स्वरूप अपने निजधाम दिव्य- ब्रह्मपुरी धाम परमधाम में विराजमान है। इसके बारे में मुंडोको उपनिषद में लिखा है।

दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठित, अर्थात् दिव्य ब्रह्मपुर में ब्रह्म है। तेजोमयी नूरी, आनन्दमयी स्वरूप है। परमधाम में अक्षर तथा अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म का स्वरूप है। अक्षर ब्रह्म अक्षरधाम में और अक्षरातीत रंग महल में निवास करते हैं जहां वह अपनी अंगनाओं के साथ आनन्द की लीला करते हैं। उत्तम पुरूष अक्षरातीत है प्रेम और आनन्द का स्वरूप-सत, चित्त और आनन्द मयी। दो भुजाएं है। एक भुजा है सत और एक भुजा है आनन्द स्वरूप और दिल क्या है चिदघन स्वरूप। चिदघन से ही सत है और चिद्घन से ही आनन्द है। सच्चिदानन्द जो परब्रह्म है वे है सत चित आनन्द के स्वरूप। एक तरफ वह आनन्द के स्वरूप में क्रीड़ा करता है। सत्ता के द्वारा असंख्य ब्रह्माण्डों का सृजन करता है।

अब प्रश्न उठता है कि इस सृष्टि की रचना किसने कीऔर कैसे की। अक्षर ब्रह्म के दिल में- अन्तस्करन में-मन-चित, बुद्धि और अहंकार है। चार पाद कहे गये हैं।

सत्सरूप ब्रह्म अहंकार का स्वरूप है,
केवल ब्रह्म बुद्धि का स्वरूप है,

सबलिक ब्रह्म चित का स्वरूप है और अव्याकृत ब्रह्म मन का स्वरूप है। सत्सरूप ब्रह्म की शक्ति मूल माया है, केवल ब्रह्म की शक्ति आनन्द योगमाया है, सबलिक ब्रह्म की शक्ति चिद्माया और अव्याकृत की शक्ति को सतमाया कहते हैं। जब अक्षर ब्रह्म इस सृष्टि को उत्पन्न करना दिल में लेते हैं तो सबसे पहले सत्सरूप ब्रह्म के अहंकार में यह बात आती है फिर यह बात केवल ब्रह्म की बुद्धि में आती है। केवल

ब्रह्म के बाद सबलिक के चित में आती है। सबलिक के सूक्ष्म में चिन्दानन्द लहरी स्थित है। चिदानन्द लहरी को शंकराचार्य जी ने अपने ''सौन्दर्य लहरी'' नामक ग्रन्थ में परब्रह्म की महारानी कहा है। इसी चिदानन्द लहरी का व्यक्त स्वरूप सबलिक के स्थूल सुमंगला शक्ति है जो अवयाकृत का महाकारण है। जब चिदानन्द लहरी (सुमंगला शक्ति) के चित में सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा आ जाती है तब अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत में सृष्टि रचना का कार्य प्रारम्भ करता है।

कोटि ब्रह्माण्ड नजरों में आवे, खिन में देख कर पल में उड़ावे।।

अव्याकृत के स्थूल में प्रणव ब्रह्म तथा रोधिनी शक्ति चिदानन्द लहरी पुरूष तथा सुमंगला शक्ति की कला रूप है। ये ही व्यक्त रूप में जगत की उत्पति एवं संहार करने की भूमिका निभाते हैं। यही इस सृष्टि मोहसागर को उत्पन्न करते हैं। इस मायावी जगत की रचना के लिये मोह सागर में अक्षर ब्रह्म की जो सुरता प्रवेश करती है वह सबलिक सूरत है। अक्षर ब्रह्म के तीन पाद विशुद्व चेतन अखण्ड एवं प्रकाशमयी है तथा चौथे पाद अव्याकृत के संकल्प से ही कारण प्रकृति बार-बार (पुनः पुनः) प्रकट होती है।

जब सृष्टि की रचना नहीं हुई थी तो कुछ भी नहीं था न परमाणु थे न आकाश था। उस समय न तो मृत्यु थी और न अमृत। अर्थात् जीव और जीवन दोनों का ही अस्तित्व नहीं था। न दिन था और न रात्रि।

अब सुनियों मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार।
नाहीं निराकार नाहीं सुन्य, ना निरगुन ना निरंजन।
ना ईस्वर ना मूल प्रकृती, ता दिन की कहूं आपा बीती।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इच्छा मूल प्रकृत।।

यह उस समय की बात है जब अनन्त मोहसागर (निराकार, निर्गुण, निरंजन) उत्पन्न नहीं हुआ था। उस समय न तो प्रणव ऊँ का प्रकटन हुआ था और न अक्षर ब्रह्म के हृदय में सृष्टि रचना की इच्छा प्रगट हुई थी। यह इच्छा ही वह मूल प्रकृति है, जिससे मोह सागर प्रकट होता है। अव्याकृत में स्थित सुमंगला शक्ति से मोहतत्व का प्रकटन होता है जिसमें अव्याकृत पुरूष प्रतिबिम्बित होकर आदि-नारायण का रूप ले लेता है। प्रकृति (कालमाया) का सूक्ष्मतम स्वरूप मोहतत्व है जिसका ओर छोर जानना मानवीय बुद्धि से सम्भव नहीं है।

मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निर्गुण।।

अव्याकृत का स्वाप्निक मन एक है जिसे आदि नारायण महाविष्णु, शेषशायी-नारायण, प्रणव ऊँ शबल ब्रह्म, हिरण्यगर्भ या ईश्वर आदि नामों से जाना जाता है। अक्षर ब्रह्म का मन (अव्याकृत) मोह-सागर में प्रतिबिम्बित होकर आदि नारायण के रूप में प्रकट होता है। उसके ''एकोऽहम् बहुस्यामः'' के संकल्प से प्रकृति के सूक्ष्मतम कणों (परमाणुओं)में विक्षोभ (कम्पन) होता है। जिसके परिणाम स्वरूप सृष्टि का सृजन प्रारम्भ हो जाता है। सृष्टि का मूल कण परमाणु कहलाता है। सत्व, रज और तम परमाणुओं के गुण हैं।

सांख्य दर्शन १/६१ में कहा गया है कि '' सत्व रजः तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः अर्थात् सत्व, रज और तम जब साम्यावस्था में होते है, तब परमाणुओं से आकर्षण- विकर्षण करने लगते हैं। इससे सृष्टि रचना का प्रारम्भ होता है सत्व, रज और तम की साम्यावस्था वाली प्रकृति से महतत्व उत्पन्न होता है।

महतत्व से अहंकार की उत्पति होती है। अहंकार से तन्मात्रायें और दोनों प्रकार की इन्द्रियां (ज्ञानेन्द्रिया एवं कर्मेन्द्रिया) उत्पन्न हुई। परमाणुओं का यह मिलन स्थूलता लाता जाता है। रूप प्रकट होते जाते हैं। निराकार माया से साकार जगत प्रकट पैदा होता है।

अहंकार से आकाश तत्व बनता है आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अगिन से जल और जल से पृथ्वी।

जैसे जैसे ब्रह्माण्ड का विस्तार होता जाता है, वैसे वैसे गुरूत्वाकर्षण बल के कारण गैसों के घनत्व में वृद्धि होती रहती है और बादल बनने शुरू हो जाते हैं। बादलों की उष्मता के अधिक बढ़ने से हाइड्रोजन के अणुओं के बीच में न्युक्लियर फ्युजन की प्रतिक्रिया होती है जिससे तारों का निर्माण होता है। बड़े बड़े तारे जल कर समाप्त हो जाते हैं तथा इनके विस्फोट को super nova कहते हैं। इनकी राख से नयी पीढ़ी के तारे बनते हैं। तारों के आसपास द्रव्य एकत्रित होकर नीहारिकाओं- (Galaxies) का रूप धारण कर लेता है। दहकते हुए सभी तारे अगिन तत्व के रूप हैं। ये दहकते हुए तारे ही टुकड़ों में परिवर्तत होकर जब शीतल हो जाते हैं तो पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, बुध, शुक्र, अरूण, वरूण, यम-६ ग्रहों की रचना होती है।तारे सूर्य से १०० गुना बड़े होते हैं। इसी प्रकार ग्रहों के टुकड़ों से चन्द्रमा आदि उपग्रहों की रचना होती है। आकाश गंगा को ही नीहारिकाएँ गैलेक्सींज कहा है। असंख्य ब्रह्माण्ड बन जाते हैं। आदिनारायण एक ही होता हे। एक ब्रह्माण्ड (univers) में अनेक आकाश गंगाए हैं, जब कि हमारी एक आकाश गंगा में अनेक सौर मण्डल हैं। असंख्य आकाश गंगाये (नीहारिकाएं- गैलेक्सीज) के समूह को ब्रह्माण्ड कहा गया है और इस universe (ब्रह्माण्ड) के बाहर भी अनेकों (universe) ब्रह्माण्ड हैं। दृश्यमान जगत में लगभग ५ खरब आकाश गंगाए हैं। हमारी इस आकाश-गंगा में लगभग ३ खरब तारे हैं, जिनसे डेढ़ खरब सूर्य जैसे हैं, २० करोड़ पृथ्वी जैसे ग्रह हैं। इनमें लगभग १० लाख ग्रहों में बुद्धि जीवी मानव निवास करते हैं। पृथ्वी के अलावा भी अन्य ग्रहों में भी जीव निवास करते हैं। विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि लोग चन्द्रमा तक पहुंच चुके हैं किन्तु आश्चर्य है कि यह सम्पूर्ण विवरण इस जगत का मात्र ४ प्रतिशत ही है। शेष ६६ प्रतिशत के बारे में कोई जानकारी नहीं है। इस ब्रह्माण्ड से भी परे असंख्य ब्रह्माण्ड हैं जिनके बारे में मानव मस्तिष्क कुछ भी नहीं जानता है। उसका ज्ञान केवल ब्रह्म को ही है।

अति शक्ति शाली दूरदर्शी यन्त्रों की सहायता से अभी तक जितने जगत को देखा गया है

उसका विस्तार इतना अधिक है कि यदि प्रकाश की गति ३ लाख कि० मी० प्रति सेकेण्ड) से दौड़ लगायी जाय, तो इस जगत के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचने में लगभग ६ खरब प्रकाश वर्ष लग जायेगे। यह तो केवल एक विश्व (universe) की बात है। आज का आधुनिक विज्ञान भी यहां थक जाता है और यही बात कहता है कि हमारे विश्व के परे करोडों विश्व हैं, जिनके बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है।

असंख्यों नीहारिकाएं। (आकाश गंगाए-Galaxies) बनती है। हमारी आकाश गंगा में असंख्यों सौर मण्डल हैं। इस सूर्य सहित नौ ग्रहों का यह सौर-मण्डल आकाश गंगा में वैसा ही अस्तित्व रखता है जैसे सागर के किनारे की रेत का एककण। यदि मनुष्य रात के अंधेरे में छत पर खड़ा हो जाय और आकाश की तरफ देखे तो उसका अहंकार अपने आप समाप्त हो जायेगा। आकाश में कितने तारे घूम रहे हैं। अपनी पृथ्वी से लाखों गुना बड़े। जो सूर्य है, यह १३ लाख गुना पृथ्वी से बड़ा है और हमारा सूर्य तो हमारी आकाश गंगा का सबसे छोटा सूर्य है। असंख्यो सौर मण्डल हैं। इस सूर्य जैसे करोड़ो सूर्य हैं, इस आकाश गंगा में और ब्रह्माण्ड में जितनी आकाश गंगाओं का पता चला है, उसमें यह आकाश गंगा (निहारिका) सबसे छोटी आकाश गंगा है आप कल्पना नहीं कर सकते इस नश्वर ब्रह्माण्ड में कितने सूर्य हैं और कितनी पृथ्वियां हैं और हम पृथ्वी के एक छोटे से देश में रहते हैं। हमारा अपना क्या अस्तित्व है। थोड़ा धन पा लेते हैं चार दिन का यौवन पा लेते हैं, थोड़ा सा पद पा लेते है, तो उस शक्तिमान परमात्मा की सत्ता को भूल ही जाते हैं।

परमात्मा के बनाये हुए ग्रह, नक्षत्र, आकाश में आकर्षण शक्ति से अपने आप घूम रहे हैं। उपग्रह चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है तो पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है एवं आकाश गंगाए किसी न किसी रूप में सभी गतिमान हैं। अक्षर ब्रह्म के संकल्प लेने मात्र से ही असंख्यों चौदे लोकों की रचना हो जाती है जिन में स्थित ब्रह्मा विष्णु एवं शिव भी असंख्य हैं। असंख्यों सौर मण्डल में ब्रह्मा विष्णु एवं शिव आदि का अपना अस्तित्व अलग-अलग है।

इत अक्षर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन!
यामे महाविष्णु मन मन थे त्रेगुन, ताथें थिर चर सब उतपन।।

इस तरह से सृष्टि की रचना हो जाती है। वेद ने कहा है-

पृष्ठात् पृथिव्या अहम् अन्तरिक्षम् आरूहम
अन्तरिक्षात् दिवंआरूहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वः ज्योतिर्गाम् अहम्।
अथर्ववेद कां४/ सू.१४/ मं.३

मैं पृथ्वी से अन्तरिक्ष को जाऊं, अन्तरिक्ष से द्युलोक को जाऊं, द्युलोक से मैं उस आनन्द मयी ज्योति को प्राप्त हो जाऊं। द्युलोक का तात्पर्य जहां से आकाश गंगाए प्रकट होती हैं। जिसे द्युलोक से सूर्य आदि को प्रकाश मिलता है। उसके परे स्वःलोक आनन्दमयी लोक जो प्रकृति से परे है माया में नहीं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार १४ लोक का समूह ही ब्रह्माण्ड कहलाता है और इस सृष्टि में असंख्य ब्रह्माण्ड हैं। वैदिक मान्यता के अनुसार समस्त सृष्टि को १४ भागों में बांटा गया है, जिसमें

सात पाताल लोक पृथ्वी पर तथा ६ लोक पृथ्वी से ऊपर अन्तरिक्ष में जो सूक्ष्म हैं अन्तरिक्ष (भुवर्लोक) में सभी ग्रह नक्षत्र स्थित है। अन्तरिक्ष (भुवर्लोक) में यही स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक तथा बैकुण्ठ (ब्रह्म, विष्णु और शिव का स्थान सत्यलोक) की सुखमय अवस्था प्राप्त होती है। ये सभी अवस्थायें एक दूसरे से अधिक सूक्ष्म एवं सात्विक होती गयी हैं। जनलोक, तपलोक तथा बैकुण्ठ को आंखो से न दिखाई देने वाले सूक्ष्म लोक हैं। सूक्ष्म अंतरिक्ष में स्वर्ग सुख को द्युलोक नाम से कहा जाता है।

जब सारी सृष्टि एक साथ ही उत्पन्न होती है तो इसका लय भी एक साथ ही होगा। साकार जगत लय को प्राप्त करके निराकार माया में विलीन हो जाता है। वैदिक मान्यता यह है कि सृष्टि के उत्पन्न होने पर उसका अस्तित्व ४ अरब ३२ करोड़ वर्षों तक होता है। सृष्टि को बने।- सृष्टि संवत - कितने वर्ष हुए १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार ११४ वर्ष। (१९६०८५३११४)

महाप्रलय से पहले अनेकों आकाश गंगाओं, नक्षत्रों, ग्रहों तथा उपग्रहों की उत्पति - लय की प्रक्रिया चलती रहती है किन्तु महाप्रलय एक साथ ही होगा। ब्लैक होल तारे में हमारे सूर्य जैसे बड़े - बड़े सूर्य समा जाते हैं। अर्थात् एक प्रकार से उनका प्रलय ही हो जाता है। परमात्मा ने सृष्टि की जो आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष निश्चित की है उसके पहले महाप्रलय का होना सम्भव नहीं है। आकाश गंगाएं (ग्लैक्सियां, नीहारिकाएं) तो बनती मिटती रहती हैं। हम जिस आकाश - गंगा - सौर मण्डल में पृथ्वी स्थित है चौदो लोको सहित कभी भी लय को प्राप्त हो सकती है। ब्रह्मसृष्टयों के ही कारण चौदे लोकों की मुक्ति होनी है और जीवों को योगमाया में अखंड कर दिया जायेगा। जागनी लीला की समाप्ति में प्रलय होगी जिसे महाप्रलय की संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है।

एक रंचकन राखी चौदे लोक की, महाप्रले कहयो ऐसो अंत ।।

वाणी में चौदह लोकों के प्रलय का ही वर्णन है। सम्पूर्ण सृष्टि के महाप्रलय का नहीं।

महाप्रलय में आदि नारायण और प्रक्रति सुमंगला शक्ति में स्थित हो जाता है। जिस सुरत ने सुमंगला से आदि नारायण में प्रवेश किया वह महाप्रलय में सुमंगला शक्ति में वापिस प्रवेश कर जाता है। इस तरह सृष्टि विलीन हो जाती है। जिस तरह से कुम्भकार घड़ा बनाता है पर उस घड़े के अन्दर नहीं बाहर ही होता है उसकी कारागारी उसकी कला घड़े के बनावट में दृष्टिगोचर हो रही होती है उसी तरह पूर्ण ब्रह्म की शक्ति ने इस सृष्टि को बनाया जो नाशवान है एक सपना है और इस सृष्टि के कण-कण में उसकी सत्ता भले ही समायी हुई है पर वह खुद इस सृष्टि-प्रकृति से परे अपने अखंड धाम से नूरी स्वरूप में विराजमान है।

हद पार बेहद है, बेहद पार अक्षर।
अक्षर पार वतन है, जागिए इन घर।।

लेखक
बबली (नलिनी) सरसावा

ज्ञान की सार्थकता उसे आचरण में लाने से हैं
डॉ. प्रवीण बत्रा की चर्चा के सम्पादित अंश

कोई भी महान व्यक्तित्व अथवा आध्यात्मिक विभूति जो इस संसार में प्रकट हुई है, जिसने इतिहास के पन्नों पर अपनी छाप छोड़ी है, जिसने संसार के अंधकार से परे के प्रकाश को देखा है, जिसने संसार के दुखों को पारकर अखण्ड के आनन्द को अनुभव किया और जिसने संसार की तृष्णाओं एवं वासनाओं को छोड़कर परब्रह्म के प्रेम को अपने हृदय में बसाया, उसका सदैव ही यह प्रयास रहता है कि जो आनन्द, प्रेम और शान्ति उसे अपने हृदय में प्राप्त हुई है वो उसे संसार में बांटे। जिस तरह से भरे हुए बरतन में जब पानी छलकता है तो चाहते हुए भी उसे बाहर से रोका नहीं जा सकता। स्वयं महामति जी ने कहा है कि-

''अब हम मिने थे ए रस इत आये छलकाना,
जोस किया हम बहुतेरा पर रस रहया न टपाना।''

अर्थात् मैं कई दिनों तक सोचती रही कि संसार इस रस के योग्य नहीं है और मैं इसको अपने ही हृदय में समेट लूं। लेकिन मेरे हृदय में परमात्मा के प्रेम और आनन्द की ऐसी लहरें उठी, कि आज दिन तक अपने जिस हृदय को मैं सागर का तट मानती रही, इन लहरों ने उसे भी पार कर लिया और संसार में यह ज्ञान, प्रेम और आनन्द फैलने लगा। प्रत्येक ऐसी विभूति चाहती है कि संसार का हर वो प्राणी जो संसार की तृष्णाओं और कामनाओं में पल-पल कुलस रहा है वो इस संसार के परे के आनन्द को देखे तथा उस शान्ति को अनुभव करे। चाहे संसार उसकी बात सुने या न सुने। उसे इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता और सामान्यतः संसार उनकी बातें सुनता भी नहीं है। यदि कोई विरला सुन भी ले तो उसे अपने जीवन में आचरण में लाने का साहस नहीं करता। हम तो आखिरत के ज्ञान की बात करते हैं। अगर सृष्टि के आरम्भ से ही देखें तो पायेंगे-कि इसमें ज्ञान की कभी भी कोई कमी नहीं रही है। मानव के उद्भव के साथ ही परमात्मा ने उसे वेद-रूपी अनमोल संपदा की और फिर इनके चार उपवेद और छेः अंग - शिक्षा, कल्प, व्याकरण छंद, निरूक्त व ज्योतिष, तथा चारों वेदों को समझने के लिये सौ से अधिक उपनिषदों की रचना की गई है। फिर छः दर्शन और फिर इस सृष्टि का सबसे विवादास्पद विषय- ब्रह्म क्या है?इस पर प्रत्येक सम्प्रदाय ने अपने - अपने मत प्रकट किये। और अभी तो यह केवल हिन्दू पक्ष है। कुरान, बाईबल,

जैन ग्रन्थ, बोध साहित्य और न जाने कितने हजारों -लाखों की संख्या में साहित्य है। अकेले भारत में चार वर्ष पूर्व ६० लाख से अधिक महात्मा थे। लाखों मन्दिर, करोड़ों मस्जिदें, करोडों गिरजाघर। सम्पूर्ण विश्व में सबसे अधिक प्रकाशित होने वाला धार्मिक ग्रन्थ बाईबल थी। भारत वर्ष में सबसे अधिक गीता को पढ़ा गया तथा रामायण के जितने पारायण हुये उतने किसी अन्य ग्रन्थ के नहीं हुये। अब प्रश्न उठता है कि इतना साहित्य, ज्ञान, प्रचारक और मन्दिर, मस्जिदें और गिरजाधर होने के पश्चात् भी आज आदमी की स्थिति क्या है?मनु ने 'मनुस्मृति' में धर्म के जिन लक्षणों की व्याख्या की है यदि उनका दीपक लेकर सम्पूर्ण पृथ्वी पर विचरण किया जाय तो मात्र गिनती के ही धार्मिक व्यक्ति मिलेंगे। यदि बुद्ध और महावीर आज इस संसार में होते तो वे संसार के अविष्कारों को देखकर अवश्य आश्चर्यचकित होते परन्तु एक चीज ऐसी है जिसे देखकर उन्हें कोई आश्चर्य नहीं होता और वह है - इंसान का मन, जो ५,००० वर्ष पूर्व जैसा था, वैसा ही आज भी है। आज से हजारों वर्ष पूर्व इंसान कोल्हू के बैल की तरह था और आज भी वैसा ही है। यदि कुछ अन्तर है तो यह कि पहले उसके तन पर एक फटी गुदड़ी थी जबकि आज एक रेशमी लिबास है। यह संसार की वास्तविकता है। पुनर्पि जन्मन पुनर्पि मरणम्। क्या कारण है- इतना ज्ञान, इतना प्रचार-प्रसार, इतने प्रचारक-यदि सब मिलकर प्रयास करते तो पूरा विश्व धर्ममय हो जाता परन्तु ऐसा नहीं हुआ। क्या धर्म का विषय इतना कठिन है कि हमारी बुद्धि उसे ग्रहण नहीं कर पाती। महाभारत में योगेश्वर कृष्ण व दुर्योधन के बीच एक बहुत सुन्दर संवाद आता है। जब योगेश्वर कृष्ण दुर्योधन को धर्म की शिक्षा देते हैं तो दुर्योधन ने बहुत सुन्दर शब्दों में उत्तर दिया कि मैं धर्म और अधर्म दोनों के बारे में जानता हूँ लेकिन न तो धर्म में मेरी प्रवृति होती है और न ही अधर्म से मैं चाहकर भी निवृत हो पाता हूं। आज संसार के प्रत्येक प्राणी की यही मानसिक दशा हैं- हर कोई जानता है धर्म क्या है, अधर्म क्या है परन्तु सब माया के दास बने हुए हैं। नीति में एक बहुत सुन्दर कथन आता है कि संसार का प्रत्येक प्राणी धर्म का फल तो चाहता है परन्तु धर्म पर चलना नहीं चाहता इसी प्रकार पाप का फल नहीं चाहता परन्तु पाप करने से चूकता भी नहीं है। धर्म क्या है?अध्यात्म क्या है,' परमात्मा क्या है,' मोक्ष क्या है,' इन सभी प्रश्नों के उत्तर का मूल्य संसार की अंधी और बहरी जनमानस के लिये दो कोड़ी से ज्यादा नहीं है। कुरान की एक आयत है- 'सूरत-उल-बकरा' जिसका भावार्थ है कि इस संसार के लोगों ने अपने लिये कुफ्र को तयार किया है, गुमराही को पसन्द किया है। चाहे

तुम (मोहम्मद) इन्हें समझाओं या न समझाओ, ये तुम्हारी बात पर कभी भी ईमान नहीं लायेंगे। संसार के लोग अंधे, गूंगे और बहरे हैं अर्थात कोई भी इस सृष्टि से परे के प्रकाश को नहीं देखना चाहता और यदि कोई ऐसा दावा करे तो संसार के लोग उसे सुनना पसन्द नहीं करते। वास्तव में धर्म की चर्चा में किसी को कोई जिज्ञासा या रूचि नहीं है और यदि कोई कहे कि उसने संसार से परे के अनहदनाद एवं संगीत को सुना है तो उस पर किसी को विश्वास नहीं होगा। और कभी किसी ने ऐसी बात की तो संसार के लोगों ने हमेशा उसका स्वागत कांटों और पत्थरों से किया। बुद्ध और महावीर ने संसार को शांति व अहिंसा का उपदेश दिया तो लोगों ने उन्हें बदले में जहर दिया लोगों ने उन्हें ही सूली पर चढ़ा दिया। मोहम्मद ने संसार को तोहीत की दावत दी लेकिन लोगों ने उन्हें इतने पत्थर मारे कि उनका सम्पूर्ण शरीर लहू - लुहान हो गया।

हम संसार को भी क्यों दोष देवें?हमारी स्वयं की जो स्थिती है वही हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न बनकर खड़ी है। हमने पिछले ४०० वर्षों में क्या पाया और क्या खोया, हमें कहाँ पहुँचना चाहिये था और हम कहाँ पहुंचे हैं। और आज हमसे क्या अपेक्षित है और हम उस पर कितना खरे उतर रहे हैं। तारतम वाणी की कीमत क्या है?इन्द्रावती जी कहती हैं,-

''मोहजल पूर कहयो न जावे, मोहजल पूर तीखा अतिजोर,।
नख-अंगुरी को ले जाय तोड़।''

अर्थात् संसार का प्रवाह तो इतना तीव्र है कि इसके अदंर कोई अंगुली भी डाल दे तो उसका नाखून भी टूट कर बह जाता। इन्द्रावती जी आगे कहती हैं,-

''एक रात अंधेरी आंखा नहीं, सुध ठोर न बुध मन।
और विषम ऐसे मोहजल मिने, पिऊ आये मुझ कारण।।

अर्थात् ऐसे मोहजल के अंदर धामधनी ने हम सबके लिये गोता लगाया और एक-एक को पकड़ कर बाहर निकालने का प्रयास कर रहे हैं। जब तारतम ज्ञान संसार में अवतरित हुआ था तब इन्द्रावती जी को बहुत आशा थी कि हर कोई इस ओर दौड़कर आयेगा और इसकी अमृतधारा में स्वयं को डुबोबाकर आनन्दित होगा लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। इन्द्रावती जी कहती हैं,-

''धड़ से सिर कोई न्यारा करे, तो भी आधा वचन न मुखथे परे।''

अर्थात् कोई अपने सिर से धड़ को अलग भी कर दे अर्थात् अपनी सर्वप्रिय वस्तु-अहम्- का त्याग भी कर देवे तो भी तारतम वानी के जिन्होंने हरमिन्दर साहब को सोने से ढकने की बात कही थी परन्तु वे लच्छीदास जी को भूल जाते हैं जिन्होंने

गुमट साहब को सोने से ढ़कने की बात जब की थी तो हमारे हादी ने उनसे कहा था कि मैंने तो कारी कामरी को ओड़ा है जिसके समक्ष संसार के रत्न व आभूषणों का कोई स्थान नहीं है। लेकिन आज हम क्या कर रहे हैं- चांदी और सोने के सिंहासन बना रहे हैं। जैसा श्री जी ने कहा उसके बिल्कुल विपरीत हम चल रहे हैं। सोने- चांदी के सिंघासनों को तो छोड़िये, आज एक नया प्रचलन चला है- मूर्तियां बनाने का। हमारे हादी आरम्भ से लेकर अंत तक हमें बुतपरस्ती में न पड़ने का सिखापन देते रहे परन्तु आज हमारे ही कार्य हमारे लिये सबसे बड़े प्रश्न बनकर हमारे समक्ष खड़े हैं। सोचिये, जो लोग भागवत को तारतम वाणी से सर्वापरि मानकर उससे जागनी का दावा करते हैं हैं उसके दसवें स्कंध के ८४ वें अध्याय का एक श्लोक है जिसका भावार्थ है कि जिसकी बुद्धि तीन तरह की धातुओं की मूर्तियां बनाकर उसमें निष्ठा सथपित करने में लग गई, वह गायों में (गधे)?के समान हैं। यदि हमने भागवत को भी ध्यान से पढ़ा होता तो हम ऐसी त्रुटि कभी न करते। सोचिये, हम किस ओर जा रहे हैं धाम धनी ने दुनी को मुरदार कहा, हमने धामधनी को ही मुरदार कर दिया। हमारे हादी ने हक की राह पर चल कर बताया अध्यात्म के शिखर पर पहुंचने के बाद जो शोभा श्री प्राणनाथ जी को प्राप्त हुई वह आज तक न तो किसी को हुई है और न ही भविष्य में होगी। और ऐसे महान शोभा वाले श्री जी कहते हैं,-

''साथ जी के चरणों मैं, नमी नमी लागूं पाय।''
लेकिन हमने अपने आचरण से सुन्दरसाथ की सारी मर्यादाओं को लांघ लिया।

श्री मुखवाणी में धाम धनी ने हमें हुक्म दिया कि '' और धंधा सब छोड़ के देखो अपने नूरजमाल का मुख।'' लेकिन हमारी स्थिती क्या है?हमारी आंखें हर पल संसार को देखने को तरसती हैं। अगर किसी को देखने की लालसा प्रकट नहीं होती तो वे है- अक्षरातीत धामधनी श्री राजजी तभी तो श्री इन्द्रावती जी ने कहा-

''धिक-धिक पड़ो मेरी पांचों इन्द्री, धिक धिक पड़ो मेरी देह।
श्याम सुन्दरवर छोड़कर, संसार सो कियो स्नेह।।''

अंत में, मैं यही कहना चाहूंगा कि परमधाम से बारह हजार साथी इस संसार में सूत कातने उतरे हैं। कोई पहुंच गया, कोई पहुंचने वाला होगा, कोई रास्ते में है और कोई अभी भी पांव पसार कर सो रहा है। राजजी ने हमें कुछ समय और अवसर दिया है हम अपनी आत्मा को भी जागृत करें और इस ब्रह्मज्ञान को संसार में भी फैलायें।

प्रतिलेखनः (Transcride)
कृष्ण कुमार कालड़ा
जयपुर

हमारा सबसे बड़ा शत्रु अहंकार

अहंकार शब्द 'अहम' अर्थात् 'मैं' से बना है। अपनी 'मैं को बढ़ा चढ़ा कर प्रदर्शित करना और दूसरों पर लादने का प्रयास करना 'अहंकार' है। अहंकार कोई पदार्थ नहीं है जिसे पकड़ या छोड़ा जा सके। जैसे अन्धकार कोई पदार्थ नहीं सिर्फ प्रकाश के अभाव को अन्धकार कहते हैं। प्रकाश जितनी मात्रा में कम होगा अन्धकार उतना ही सघन होगा। अन्धकार को हम न तो पकड़ सकते हैं और न ही छोड़ सकते हैं। क्योंकि पकड़ा उसी को जा सकता है जिसे छोड़ा जाए इस प्रकार भी कह सकते हैं कि छोड़ा उसी को जा सकता है जिसे पकड़ा जा सके या पकड़ा हुआ हो।

अहंकार के कारण हमारे सामने कई व्यवहारिक कठिनाइयां एवं समस्याएं पैदा होती हैं, हमें अपयश तथा उपेक्षा का सामना करना करना पड़ता है, लेकिन हम न तो इस रहस्य को समझ पाते हैं और न समझने की कोशिश ही करते हैं। यदि हम वास्तविकता को समझ पाते तो अहंकार से छुटकारा पा जाते। हमारे मन की तरह अहंकार भी कर्म प्रधान तत्व है अगर वो सतोगुण वाला हो तो निर्विकार निश्चल तथा जीव के अस्तित्व का प्रतीक मात्र होता है और इसमें कोई दोष नहीं होता। सतोगुणी अहंकार का मतलब इतना है कि 'अहम' यानि 'मैं' हूं यह मानना और अनुभव करना। जीव के अस्तित्व का ज्ञान रखना ही अहंकार है पर यह सात्विक और अनिवार्य अहंकार है, इससे बचा नहीं जा सकता। लेकिन जब अहंकार सतोगुण की अपेक्षा रजोगुण या तमोगुण में लिप्त हो जाता है तब यही अहंकार दूषित, अशुभ और अनिष्टकारी हो जाता है अतः अससे बचना जरूरी हो जाता है।

संसार की स्थिति बहुत ही विचित्र है और आज ही हो ऐसा नही है, सदा से ही विचित्र रही है। लेकिन इस संसार के लोग विचित्र से भी विचित्र हैं क्योंकि धनवान व्यक्ति धनवैभव और भोग विलास में डूबा हुआ है तो त्यागी इसी अहंकार का शिकार है कि मैंने इतना त्याग किया इतने उपवास किये यह सब क्या है अहंकार का ही रूप है। अब एक व्यक्ति दान करता है या कुछ बनवा देता है तो वह वहां अपने नाम का शिलालेख लगवाना नहीं भूलता। यह अहंकार ही है यश और वाहवाही प्राप्त करने की कामना से किया गया व्यापार है। शास्त्रों में कहा है कि दान देते समय अपने दूसरे हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए की दान दे दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि दाहिने हाथ से दान दिया जा रहा हो तो बांये हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए उसे दान कहते हैं अहंकार मुक्त दान।

ऐसे अहंकार से ग्रस्त होने पर सबसे पहला प्रभाव यह होता है कि हमारा अहम-भाव बहुत बढ़ जाता है और हम अपने आपको ऊंचा- व्यक्तित्व वाला समझने या मानने लगते हैं परिणाम यह होता है कि किसी की बात सुनने और मानने को राजी नहीं होते। हम सीखना नहीं सिखाना पसंद करने लगते हैं, सुनना नहीं सुनाना और मानने की जगह मनवाना पसंद करने लगते हैं। इसी अहंकार के

कारण सबसे बड़ा यह नुक्सान होता है कि हम कूप-मण्डूक बन जाते हैं और हमारी उन्नति व विकास के रास्ते बन्द हो जाते हैं।

इस आधुनिक जमाने में हर तरफ हर तरह से अहंकार को बढ़ाया जा रहा है क्योंकि भोगवादी विचारधारा के लिए अहंकार का होना जरूरी है अहंकारी व्यक्ति के अहंकार की रक्षा और वृद्धि करके आप उससे कुछ भी करवा सकते हैं। एक कहावत है चापलूसी सामने वाले के अहंकार को पोषित करती है, बढ़ाती है और वह हमारी बात मान लेता है। हमारी गलती भी माफ कर देता है। हम रास्ते में जा रहे हैं किसी को धक्का लग गया और हम 'क्षमा' या माफ कर दीजिए बोल देते हैं तो सामने वाला भी कोई बात नहीं बोलकर बात को टाल देता है क्यों?क्योंकि हमने 'क्षमा' कहकर उसके 'अहम' को ठेस लगने से बचा लिया और वह संतुष्ट हो गया। उसके अहंकार को चोट नहीं पहुँची।

अहंकार हमें चापलूसी और प्रशंसा प्रेमी बना देता है जिससे ज्यादातर हमें नुकसान ही होता है। कोई हमारी झूठी- सच्ची प्रशंसा कर दे तो हम चने के पेड़ पर चढ़ जाते हैं और उसका स्वार्थ पूरा करने के लिए राजी हो जाते है। आपने कभी सोचा है कि बड़े -बड़े स्टोर्स के कांउटर पर लड़कियां क्यों रखी जाती हैं?सिर्फ इसलिए की पुरूष ग्राहक उन सुन्दरियों के सामने अपने अहंकार की रक्षा करनें के लिए उनकी बात मुस्कुरा कर मान लें। काउंटर पर रखी प्लेट पर लिखा रहता है- फिक्स्ड रेट्स! यानि मोलभाव करने की कोई गुंजाइस नही! आपने कोई पोशाक देखी और सुन्दर सेल्स गर्ल ने टूथपेस्ट वाली मुस्कुराहट के साथ कह दिया-वाह! क्या खूब पसंद है आपकी! इस पोशाक में आप खिल उठेंगे। बस आप हैप्पी हो गये और मामला प्लेट हो गया। सेल्स गर्ल ने कैश मेमो आपको दिया आदतन कमर्शियल ढंग की डेढ़ इंची मुस्कुराहट के साथ 'थैंक यू' कह दिया तो आपके पास इसके सिवा कोई चारा नहीं कि आप एक रईस की तरह चुपचाप पेमेन्ट कर दें और साथ ही मुस्कुराते हुए 'इट्स ऑल राइट' यह भी प्रगट करें कि जैसे बड़ी मामूली सी बात हो। छोटी दुकान पर वही पोशाक कम दामों में मिल जाती लेकिन हमारा अहंकार हमें ऐसी घटिया दुकान पर जाने नहीं देता। यह अहंकार है।

हमारा अहंकार मौत का नाम सुनते ही कांप जाता है और यह मानने को तैयार नहीं होता कि एक दिन मृत्यु आनी है। हमारा अहंकार यही सोचता है कि दूसरे ही मरते हैं और बात ठीक भी मालूम देती है क्योंकि हम - दूसरों को मरघट तक छोड़कर घर लौट आते हैं और खुद अभी भी जिन्दा हैं, लेकिन जरा सोचें कि जिन्हें हम मरघट छोड़कर आते हैं, कभी वे भी औरों को मरघट तक छोड़ने जाया करते थे और एक दिन हमें भी मरघट तक पहुंचा दिया जायेगा। बारी तो सब की आनी है आज या कल।

लेकिन हमारा अहंकार हमें इस सत्य पर विचार करने नहीं देता और यदि विवेक इशारा करता भी है तो हमारा अहंकार वेचैन और विचलित हो जाता है। मरघट से लौटते समय हमारे अहंकार को विवेक का एक झटका जरूर लगता है और हमारे अन्दर 'मरघटिया' वैराग जागृत हो जाता है। हम सोचते हैं कि क्या रखा है इस दुनियां में?कल तक बेचारा अच्छा भला था और आज मिट्टी में मिल गया पर घर तक आते-आते हमारा अहंकार फिर प्रवल हो जाता है

और क्षणिक वैराग्य लुप्त हो जाता है। हम फिर से अहंकार के भ्रम - जाल में फंस जाते हैं।

इस तथ्य पर विचार करे एवम् अपनी अहम भावना को त्याग दें।

प्रणाम जी

लेखकः-

सच्चिदानन्द, ज्ञानपीठ

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ परिवार की ओर से
हार्दिक श्रद्धांजलि

शोक समाचार

आप सब सुन्दरसाथ को अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री मती नीरू खुराना, जो कि अध्यात्म के क्षेत्र में अग्रणी थी। वो धाम दर्शन पत्रिका की सम्पादिका थी। उनके लेख- तारतम मंजरी, धाम दर्शन तथा अमीरस पीजिए पत्रिकाओं में छपते थे। ऐसी ब्रह्मात्मा का दिनांक १४-७-१८ को उनके निवास स्थान कानपुर में धामगमन हो गया है। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा परिवार की तरफ से पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राज जी के चरणों में प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उपने श्री चरणों में स्थान देवें और उनके परिवार को इस असामयिक दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

प्रणाम जी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

विनम्र निवेदन

धाम धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी! वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में शिक्षण, साहित्यिक एवं निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जिन सुन्दरसाथ ने इन कार्यों के लिए अपनी सेवाएं लिखवायी है या स्वतः उनके मन में सेवा करने की इच्छा है, कृपया वे इन खातों में धनराशि भेजने का कष्ट करें। इस बात का ध्यान रखा जाय कि जिस सेवा की धनराशि भेजी जा रही है, मात्र उसी खाते की C.B.S.A/C संख्या में भेजें।

प्रणाम जी

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया

1. खाता धारक का नाम–श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रष्ट
   खाता संख्या–3290805513
2. खाता धारक का नाम–श्री ज्ञानपीठ प्रकाशन
   खाता संख्या– 3290804553

पता–शाखा–सरसावा, सहारनपुर उ. प्र. 247232
MICR-Code" 247016005
IFSC CODE-CBIN0282531

सामान्य खाता संख्या
१३३५०००१००१११९१६
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

साहित्य खाता संख्या
१३३५०००१००११८७५१
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

भवन निमार्ण खाता संख्या
३४९७११८८७६७
भारतीय स्टैट बैंक
(११४३९) सरसावा, सहारनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन- २४७२३२
IFS CODE- SBIN0011439

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रकाशित साहित्यों की सूची

क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
1.	किरंतन टीका हिन्दी	300.00
	किरंतन टीका नेपाली	300.00
	किरंतन टीका अंग्रेजी	350.00
2.	खिलवत टीका	150.00
3.	सागर टीका	170.00
4.	श्रृंगार टीका	300.00
5.	सिन्धी टीका	150.00
6.	परिक्रमा टीका	275.00
7.	परिक्रमा टीका (अंग्रजी)	350.00
	कलश हि. गुजराती	225.00
	रास टीका	150.00
	बीतक टीका	400.00
8.	विद्वत्दमनी	200.00
9.	धाम सुषमा	60.00
10.	पटदर्शन	200.00
11.	दोपहर का सूरज (हिन्दी)	60.00
12.	दोपहर का सूरज (अंग्रेजी)	80.00
13.	प्रेम का चाँद	65.00
14.	बोध मंजरी (हिन्दी)	15.00
15.	बोध मंजरी (अंग्रेजी)	15.00
16.	बोध मंजरी (नेपाली)	30.00
17.	ज्ञान मंजूषा	20.00
18.	हमारी रहनी	50.00
19.	अमृत बिन्दु	10.00
20.	सत्यांजलि	40.00
21.	बाल युवा संस्कार	10.00
22.	संस्कार पद्धति	15.00
23.	निजानन्द चित्रकथा	30.00
24.	चितवनी	05.00
25.	चितवनी नक्शा	30.00
26.	नित्य पाठ (चौपाई)	15.00
27.	नित्य पाठ (बीतक)	05.00
28.	मेहर सागर	10.00
29.	श्रृंगार के मोती	15.00
30.	सागर के मोती	10.00

क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
31.	अनमोल मोती	05.00
32.	स्वास्थ्य के प्रहरी	30.00
33.	अनमोल मोती तफसीरे हुसैनी	50.00
34.	जामिल–ए–मारिफल	30.00
35.	फरमान	30.00
36.	बुलंद मुकदमा बड़ा मसौदा	40.00
37.	शब–ए–मेअराज	15.00
38.	शेख जी मीर जी का बयान	20.00
39.	Supreme Truth God	20.00
40.	झूठ ही झूठ	60.00
41.	जागो और जगाओ	100.00
42.	निजानन्द योग	60.00
43.	ब्रह्मवाणी चर्चा	40.00
44.	सेवा पूजा	30.00
45.	मुख्तार–ए–हिंद	20.00
46.	Nijanand School	120.00
47.	श्री मुखवाणी संगीत (राग सहित)	150.00
48.	प्रश्नमाला	05.00
49.	प्राणनाथ महिमा (हिन्दी)	20.00
50.	प्राणनाथ महिमा (गुजराती)	20.00
51.	बोध मंजरी (गुजराती)	15.00
52.	सिनगार (गुजराती)	300.00
53.	सागर (गुजराती)	170.00
54.	चितवनी (गुजराती)	05.00
55.	ध्यान की पुष्पाञ्जली	70.00
56.	हमारी शाश्वत सम्पदा	60.00
57.	तारतम पीयूषम	70.00
58.	बोध मंजरी (उड़ीया)	15.00
59.	श्री मुखवाणी संगीत	60.00
60.	तमस के पार (बड़ी)	40.00
	तमस के पार (छोटी)	20.00
61.	तीसरा क्यामतनामा	90.00
62.	ब्रह्मांड रहस्य	40.00
63.	तारतम के नीर्झर	70.00
64.	मूल स्वरूप की ओर	80.00

ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप।
दिल अपने में हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप।।१।।

श्री महामति जी की आत्मा कहती हैं कि हे धाम धनी! आपने तारतम वाणी के प्रकाश में सब कुछ समझा ही दिया है और अब तो मेरे धाम हृदय में साक्षात् आकर विराजमान हो गये हैं। ऐसी स्थिति में न तो मुझे किसी ताले या कुंजी के बारे में सोचना है और न दरवाजा खोलने के विषय में। अब आप, जिस तरह से भी चाहे, उस तरह से मिलिए।

सेहेरग से नजीक, आड़ा पट न द्वार।
खोली आंखें समझ कीं, देखती न देखे भरतार।।२।।

हे प्रियतम! आप मेरे धाम हृदय में मेरी प्राणनली (षेहरग) से भी अधिक निकट हैं, इसलिये अब मेरे और आपके बीच में किसी भी प्रकार का पर्दा नहीं है। ऐसी स्थिति में तो अब मुझे इष्क का द्वार भी ढूंढने की आवष्यकता नहीं रह गयी है। आपने मेरी ज्ञान दृष्टि को तो खोल दिया है, किन्तु इष्क नहीं होने से मैं आपको देखते हुए भी नहीं देख पा रही हूँ।

BOOK POST

RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2016-18

प्रकाशक
पू.श्री राजन स्वामी जी

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232

सम्पादक
श्री एस. पी. आर्य
भूतपूर्व आई. ए. एस.

तारतम मंजरी पत्रिका के स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा
जिला–सहारनपूर, दूरभाष–8650851010
अवतरित न होने पर कृपया इस पते पर लौटाये।
धन्यवाद

सेवा में,